ओ३म्

[...न्धानमाला—पुष्प १]

... इतिहास नहीं है

[...istory in the Vedas]

(...के अध्ययन का फल)

(...२४० प्रमाणों सहित)

लेखक :

हंसराज, भूतपूर्व रिसर्च स्कालर

और

पुस्तकाध्यक्ष, डी० ए० वी० कालेज रिसर्च लाईब्रेरी, लाहौर

तथा

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान,

साधु आश्रम, होश्यारपुर (पंजाब)

प्रकाशक :

श्री स्वामी सर्वानन्द जी

अध्यक्ष :

दयानन्द मठ, दीनानगर, जि० गुरदासपुर (पंजाब)

प्राप्तिस्थान—

१. मैनेजर, विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भण्डार,
P. O. साधु आश्रम, होश्यारपुर (पंजाब)।

२. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१।

३. गोविन्दराम हासानन्द, आर्य बुक-सेलर, नई सड़क, दिल्ली।

मूल्य : २ रुपये

❀ ओ३म् ❀

[वैदिक अनुसन्धानमाला—पुष्प १]

वेद में मानुष इतिहास नहीं है

[No Human History in the Vedas]

(अनेक वर्षों के अध्ययन का फल)

(१०० ग्रन्थों के २४० प्रमाणों सहित)

लेखक :

हंसराज, भूतपूर्व रिसर्च स्कालर

और

पुस्तकाध्यक्ष, डी० ए० वी० कालेज रिसर्च लाईब्रेरी, लाहौर

तथा

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान,

साधु आश्रम, होश्यारपुर (पंजाब)

प्रकाशक

श्री स्वामी सर्वानन्द जी

अध्यक्ष

दयानन्द मठ, दीनानगर, जि० गुरदासपुर (पंजाब)

प्राप्तिस्थान—

१. मैनेजर, विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भण्डार,
P. O. साधु आश्रम, होश्यारपुर (पंजाब)।

२. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान, नई दिल्ली-१।

३. गोविन्दराम हासानन्द, आर्य बुक-सेलर,
नई सड़क, दिल्ली।

मूल्य : रुपये

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ नं.	शुद्ध	अशुद्ध
७	वैजयन्ती	वेजयन्ती
८	आसत	आस्त
१७	निरूपण	निरूपणं
१९	Muir's	Mouier's
२०	Monier	Mouier
२४	निविदध्याय	निविद्ध्याय
२७	तांम्रा	ताम्रा
३५	निरुक्त-समुच्चय:	निरुक्त-समुच्च:
३६	कामवासनायाम्	कामावासनायाम्
३९	Monier Williams	Mouier Williams
४२	शुष्णं	शुष्ण
४६	सातवलेकर	सातव लेकर

वेद में मानुष इतिहास नहीं है ।

वेद में भूतकाल-द्योतक कई वाक्य हैं और वेदों के व्याख्यान-रूप ब्राह्मण-ग्रन्थों में अनेक आख्यान, उपाख्यान आते हैं जिन को इतिहास भी कहा गया है। उन से सच मुच के मानुष इतिहास की आशंका हो सकती है । परन्तु प्राचीनतम वेद-व्याख्यान-रूप वेद की शाखाओं और ब्राह्मण ग्रन्थों, निरुक्त तथा मीमांसादि से स्पष्ट ज्ञात होता है कि उन आख्यानादि का वह अर्थ नहीं जो उनके शब्दों से निकलता है। किन्तु दूसरा ही अर्थ है जोकि सृष्टि-क्रम के अनुकूल है। इन आख्यानादि को औपचारिक, औपमिक, गौण, भाक्त आलंकारिक, लाक्षणिक और अर्थवाद कहा गया है। यह आख्यानादि अधिकतर देवताओं के सम्बन्ध में आते हैं जिन को आजकल सचमुच मनुष्यवत् शरीर-धारी और अलौकिक शक्ति-सम्पन्न समझा जाता है । उन का वास्तविक और सम्भव अर्थ भी उन्हीं ग्रन्थों से प्रतीत होता है अर्थात् देवता मुख्यतया परमात्मा और उसके अतिरिक्त चेतन व अचेतन अनेक सांसारिक पदार्थों के भी वाचक हैं—

सर्वेषां वेदवाक्यानां ब्रह्मणि तात्पर्यम् ।

ऐसा शङ्कराचार्य जी का भी आशय है।

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति.........। कठोप १।२।१५ ॥

वेद का तत्त्वार्थ समझने तथा अन्य धार्मिक बातों के लिये इन आख्यान (=पुराण, इतिहास) नामक रोचक परन्तु गौण कहानियों को जानना भी अत्यन्त आवश्यक है जैसे कि यज्ञ और सूर्य रूपी वामन और त्रिविक्रम विष्णु के फैलाव (व्यापकता) बताने के लिये औपचारिक कथानक—

वामनो ह विष्णुरास । शब्रा १।२।५।५ ।।

तथा-पतिव्रत धर्म का महत्त्व दिखाने के लिये सुकन्या, च्यवन और अश्विनौ का औपचारिक आख्यान—

तौ (अश्विनौ) हैनां (सुकन्यां) एत्योचतुः-'कुमारि ! स्थविरो वा अयमसर्वो नालं पतित्वनायावयोर्जायैधी'ति, नेति होवाच (सुकन्यो) यस्मा एव मा पितादात्, तस्य जाया भविष्यामीति । जैंब्रा. ३।१२३ ।। पश्यत-शब्रा ४।१।५।९ ।।

इस आख्यान में अश्विनौ ने सुकन्या के पतिव्रत धर्म की परीक्षा के लिये उसको फुसलाना चाहा कि वह अपने बूढ़े पति को छोड़ कर उन की भार्या बन जाए, परन्तु सुकन्या के पतिव्रत धर्म पर दृढ़ रहने के कारण वह उस से बहुत प्रसन्न हुए और उसके बूढ़े पति को फिर जवान बना दिया। अश्विनौ द्यावा-पृथिवी का नाम है—

इमे ह वै द्यावापृथिवी प्रत्यक्षमश्विनौ ।

शब्रा ४।१।५।१६।।

इसी कारण इन गौण आख्यानों को जानना भी आवश्यक है—

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत् । बिभेत्यल्प-श्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति ।

महाभारत, आदिपर्व, १।३६७ ।।

वेद और शाखा, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों में इस प्रकार के गौण आख्यान बहुत हैं जिन का शाब्दिक अर्थ न लेकर

दूसरा ही अर्थ जो सम्भव अर्थात् प्रत्यक्ष और सृष्टिक्रम के अनुकूल हो, प्राचीनतम ग्रन्थों में लिया गया है। वैदिक वचन प्राय: करके गूढ़ रहस्यमय तथा पहेली रूप ही हैं जिन को ऋषि और तपस्वी ही सुगमता से समझ सकते हैं। दूसरे लोग भी वैदिक ग्रन्थों के अन्वेषण द्वारा पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं—

मनुष्या वा ऋषिषूत्क्रामत्सु देवानब्रुवन् को न ऋषिर्भविष्यतीति तेभ्य एतं तर्कमृषिं प्रायच्छन्।

॥ निरुक्त १३।१२ ॥

न ह्येषु प्रत्यक्षमस्त्यनृषेरतपसो वा पारोवर्यवित्सु तु खलु वेदितृषु भूयोविद्य: प्रशस्यो भवति।

॥ निरुक्त १३।१२ ॥

छन्दांसि खलु वा एतं नोपनमन्ति, यं मेधा नोपनमति। तैत्तिरीय संहिता ३।४।९।५॥

लोके व्युत्पन्नस्य वेदार्थप्रतीतिः। सांख्यदर्शन ५।४०॥

पाश्चात्य विद्वान् भी इस विषय में सहमत हैं कि सम्पूर्ण वेद का सच्चा और निश्चयात्मक सर्वसम्मत अर्थ अभी तक उन्हें प्राप्त नहीं हो सका। उन में पहेलियां और आलङ्कारिक वचन बहुत हैं—

Even the actual Agni myths have only originated in the metaphorical and enigmatic language of the poets. (Page 89)

We come across such riddles again in the Atharva Veda as well as in the Yajurveda.

(Page 118)

History of Indian Literature, by Winternitz, Vol. 1.

Two of the hymns (of the Rigveda) consist of riddles. One of these (viii 29...) describes various gods without mentioning their names. More elaborate and obscure is a long poem of fifty-two stanzas (I. 164) in which a number of enigmas, largely connected with the sun, are propounded in mystical and symbolic language.

Vedic Reader by Macdonell, Introduction,

p. xxvi

उपर्युक्त वचनों में यजुर्वेद तथा अथर्ववेद के कई स्थल तथा ऋग्वेद १।१६४ तथा ८।२९ को पहेली-आत्मक कहा गया है ॥

......The obscurities and difficulties that still confront the interpreter of the Rigveda. Vedic Reader by Macdonell, Introduction,

page xxxi.

The hymn RV.I. 164, contains a large number of such riddles, most of which unfortunately, we cannot understand. (Page 117).

There are many hymns and very many isolated passages of the Rigveda whose right meaning is still in the highest degree doubtful (Page 69). History. of Indian Literature by Winternitz Vol. 1.

भिन्न २ गुणों और शक्तियों वाला होने के कारण सब देवता प्रधान तथा ईश्वर के ही वाचक हैं—

एव उ ह्येव सर्वे देवा: ।शतपथ–ब्राह्मण

१४।१।२।१२ ।। बृहदाउप १।४।६ ।।

प्रजापतिः सर्वा देवताः । तैत्तिरीय–ब्राह्मण

३।३।७।३ ।। तै सं ३।९।५।३ ।। ७।५।६।३ ।।

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः । श्वेताश्वतरोपनिषद् ३।४।।

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः ।

तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः ।

यजु ३२।१ ।।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् । एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः । ऋग्वेद १।१६४।४६ ।।

एतमेके वदन्त्यग्निं मनुमन्ये प्रजापतिम् ।

इन्द्रमेके परे प्राणमपरे ब्रह्म शाश्वतम् ।।

मनु. १२।१२३।।

वरुणनामकः सोमदेवो जगदीश्वराभिन्नः ।
तैत्तिरीय संहिता २।२।८।१ पर सायणभाष्य ।
सृष्टिस्थित्यन्तकरणाद् ब्रह्मविष्णुशिवात्मकाम् ।
स संज्ञां याति भगवानेक एव जनार्दनः ।। विष्णुपुराण
१।२।६३ ।।

इत्यादि और भी अनेक प्रमाण हैं ।।

ईश्वर वाचक होने के अतिरिक्त भिन्न २ देवता जगत् की भिन्न २ शक्तियों वा गुणों आदि के भी वाचक हैं। उनके अङ्गादि की कल्पना भी आलङ्कारिक है—

देवाश्च वाऽअसुराश्च । उभये प्राजापत्याः प्रजापतेः पितुः (=संबत्सरस्य) दायमुपेयुरेतावेवार्धमासौ (शुक्ल-कृष्णपक्षौ) । शतपथब्राह्मण १।७।२।२२।। (देवाः=शुक्ल-पक्षः । असुराः=कृष्णपक्षः) ।

स्तोमा देवाः । जैमिनीय ब्राह्मण १।९०।।
एत एवापि सर्वे देवा यत्स्तोत्राणि । जैब्रा १।२७९ ।।
कतम एते देवा इति, छन्दाꣳसीति
ब्रूयाद् गायत्रीं त्रिष्टुमं जगतीमिति ।
तैत्तिरीय संहिता २।६।९। ३-४।। पश्यत जैब्रा १।३४२।।
या तेनोच्यते साऽस्य देवता भवति ।
कात्यायनकृतसर्वानुक्रमणी । द्वादशकाण्डी परिभाषा
२।५ ।।

या यत्र चोद्यते सा तत्र देवता । न हि जात्या काचिद् देवतास्ति वैदिके व्यवहारे। कात्यायन-श्रौतसूत्र १।२३ 'द्रव्यं देवता त्यागः' पर कर्क भाष्य ।। 'एवमत्राप्यग्निनाम्नो-भयार्थग्रहणे नैव कश्चिद्दोषो भवतीति । अन्यथा कोटिशः श्लोकैस्सहस्रग्रन्थैरपि विद्यालेखपूर्तिरत्यन्तासम्भवास्ति । अतः कारणादग्न्यादिशब्दैर्व्यावहारिक-पारमार्थिकयोर्विद्ययो-र्ग्रहणं स्वल्पाक्षरैः स्वल्पग्रन्थैश्च भवतीति मत्वेश्वरेणाग्न्यादि-प्रयोगाः कृताः । यतोऽल्पकालेन पठन-पाठन-व्यवहारेणाल्प-श्रमेणैव मनुष्याणां सर्वा विद्या विदिता भवेयुरिति । परमकारुणिकः परमेश्वरः सुगमशब्दैस्सर्वविद्योद्देशानुप-दिष्टवान्—इति विज्ञेयम् ।' महर्षिदयानन्दकृत ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका प्रश्नोत्तरविषयः ।

देव= विबुध= पण्डित (विद्वान्)—वैजयन्ती-कोष, त्र्यक्षरकाण्ड, पुल्लिङ्गाध्याय, श्लोक ६६।। मेदिनी कोष, श्लोक ३६।। अमरकोष १।१।७ ।।

विद्वांसो हि देवाः । तस्मादाह—'उशिजो वह्नितमान्' (यजु ६।७।।) इति ।। शब्रा ३।७।३।१० ।। उशिज्=मेधाविन् (=विद्वान्)...निघण्टु ३।१५ ॥

ये ब्राह्मणाः शुश्रुवांसो ऽनूचानास्ते मनुष्यदेवाः । शब्रा २।२।२।६ ।।

घर्मं इन्द्रो राजेत्याह तस्य (इन्द्रस्य) देवा विशः (प्रजाः), ताः (विशः=देवाः) इमऽग्रास्त इति श्रोत्रिया अप्रतिग्राहका उपसमेता भवन्ति तान् उपदिशति (उंगली से उन देवों=श्रोत्रिय=वेदज्ञ विद्वानों की ओर निर्देश करता है)।

देवेभ्यो द्योतनादिकर्मकेभ्यः प्राणेन्द्रियेभ्यः। काठक-गृह्यसूत्र पृष्ठ २९४ ।=लौगाक्षिगृह्यसूत्र, Appendix IV, सरस्वत्यनुवाक सटीक, मन्त्र ५, 'स भगवो न मरिष्यसि ॥'

देवानां रश्मीनाम्। (तैसं १।४।४३।१ भाष्ये सायणः) तथा पश्यत—निरुक्त १३।११,२६॥१२।२९ ॥ तैस ६।४।५।५॥ तैब्रा २।१३ भाष्ये सायणः॥

अग्निरपि रुद्र उच्यते। निरुक्त १०।७॥ तथा पश्यत—मैसं २।१।१०॥ काठसं १०।६॥२४।९॥ कपिष्ठलसं ३५।५॥ शब्रा ५।३।१।१०॥६।१।३।१०॥

इन्द्रः=इन्द्रियवान्=आत्मा—

शब्रा ६।३।२।४॥ अष्टाध्यायी ५।२।९३॥ (इन्द्रियमिन्द्र-लिङ्ग···) पर काशिका टीका।

इन्द्रो वै यजमानः।

शब्रा २।१।२।११॥४।५।४।८॥५।१।३।४॥

स यस्स इन्द्र एष एव स य एष (सूर्यः) एव तपति।

जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण १।२८।२॥१।३२।

इन्द्रः सूर्य इति ।

तांब्रा १४।२।५ सायण भाष्य

ईदृग्भूततेजसा युक्तः सूर्यश्च इन्द्र एव ।

ऋ १।८४।५ पर सायण भाष्य

अथ य स इन्द्रोऽसौ स आदित्यः ।

शब्रा ८।५।३।२॥

इन्द्र=विद्युत् (इन्द्र) =स्तनयित्नु=अशनि=विद्युत्—
स्तनयित्नुरेवेन्द्रः ।

शब्रा ११।६।३।९॥

कतमः स्तनयित्नुरित्यशनिरिति ।

शब्रा ११।६।३।९॥

यदशनिरिन्द्रस्तेन ।

कौषीतकि ब्रा. ६।९॥

विद्युद्वा अशनिः ।

शब्रा ६।१।३।१४॥

—तेन हि वैद्युतेन ज्योतिषा वाय्वावेष्टितेन इन्द्राख्येन ।

निरुक्त २।१६ पर दुर्ग टीका

एता देहे विशेषेण तत्र नित्या हि देवताः । एतास्त्वां सततं पान्तु दीर्घायुरवाप्नुहि ।

सुश्रुत, सूत्रस्थान ५।२५॥

इसकी संस्कृत टीका—

यस्त्विन्द्रो लोके पुरुषेऽहङ्कारः सः । रुद्रो रोषः । सोमः प्रसादः, वसवः सुखम् । अश्विनौ कान्तिः, मरुदुत्साहः, तमो मोहः, ज्योतिर्ज्ञानम् ॥

इत्यादि बीसियों और प्रमाण दिए जा सकते हैं ।

The gods are human in appearance. Their bodily parts are often merely illustrative of the phenomena of nature which they represent Thus the tongue and limbs of the fire-god, Agni, merely denotes his flames. Hymns from the Rigveda by Macdonell, page 11.

The individual gods corresponding to their origin from the personification of natural phenomena (page 32) since there are many phenomena, and hence many gods, (p.33). Rigveda by Kaegi.

The Indra's dragon-fight refers to some powerful natural phenomenon (p. 83): History of Indian Literature by Winternitz, Vol. I.

......Indra, Varuna, Mitra, Aditi, Visnu, Pusan, the two Asvins, Rudra and Parjanya. These gods' names, too originally, indicated natural phenomena, and natural beings. (Page 75).

History of Indian Literature by Winternitz, Vol- I.

In the hymns (RV 5.80.5-6 and 6.64.1-3) ---- . -- in magnificent metaphors which are intended to depict the splendour of the rising dawn (p. 91).

History of Indian Literature, by Winterniz, Vol. I.

Without the Vedic evidence we should not know, for instance, what was the original nature of the Greek gods... . the evidence, however, shows that many at least of the Greek gods must have been personifications of natural phenomena (p 59). Lectures on Comparative Philology, by Prof. A A. Macdonell, 1926, published by the Calcutta University.

And this is chief reason why Vedic mythology has so often proved a master-key to open some of

the secret chambers of other mythological systems, whether of Greeks and Romans, or of Polynasians and Melanasians (Page 335). Essays on Mythology and Folklore by Max Muller.

अर्थात् यूरोपियन विद्वान् भी इस बात को मानते हैं कि प्रायः सभी देशों के देवतावादों के सम्बन्ध में यदि यह जानना हो कि अमुक-अमुक देवता जगत् की किस-किस शक्ति वा पदार्थ का रूपक है तो इसके लिए केवल वैदिक देवतावाद ही परम सहायक है। उनको यह भी समझ लेना चाहिए कि सर्व प्रथम वेदों ने ही सर्व सांसारिक शक्तियों और पदार्थों के ज्ञान-विज्ञान को देवतावाद क सरल और रोचक आलङ्कारिक ढंग में वर्णन किया और साथ ही वेदों के व्याख्याकार प्राचीनतम ऋषियों ने वेद की (तैत्तिरीय, काठक, कपिष्ठल, मैत्रायणी) शाखाओं और ब्राह्मण-ग्रन्थों, आरण्यकों, उपनिषदों, निघण्टु और निरुक्त ने यह बात सुरक्षित कर दी कि अमुक देवता अमुक सांसारिक शक्ति वा पदार्थ का वाचक है। जिन जातियों को वेद और उनके उपर्युक्त प्राचीन व्याख्यान प्राप्त न हो सके उन्होंने सचमुच के लोकोत्तर शक्तियुक्त शरीरधारी आधुनिक देवताओं को मान लिया और उनके सम्बन्ध में गौण और सृष्टि-सम्बन्धी नित्य इतिहास को सच्चा मानुष इतिहास भी मान लिया। काल्पनिक कहानियों द्वारा लौकिक नीति वा धर्मनीति का उपदेश करना विद्वानों का ढंग रहा है और अभी तक है। उदाहरण के लिये पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, Esop's Fables तथा मुंशी प्रेमचन्द के सामाजिक उपन्यासों का नाम लिया जा सकता है। कई धर्माचार्यों ने भी parables अर्थात् काल्पनिक कहानियों का प्रयोग किया है। यदि इन कल्पित कहानियों को कोई सच्चा इतिहास मान ले तो इसमें कहानी कहने वा बनाने वाले का

दोष नहीं। दोष केवल सुनने वाले का है। 'यह पुरुष सिंह है' इसका तात्पर्य उस पुरुष को शूर और वीर बताना है। जो पुरुष ऐसा न समझ कर उस पुरुष को सचमुच का सिंह समझे व यह कहे कि यदि यह सिंह है तो उसकी पूंछ कहां है? तो ऐसा कहने वालों को बुद्धिमान् नहीं कहा जा सकता।

वेद और वैदिक ग्रन्थों में आलङ्कारिक वचन बहुत हैं। अतः उनका मुख्य (शाब्दिक) अर्थ न लेकर गौण अर्थ ही लेना चाहिये। यदि मुख्य अर्थ प्रत्यक्ष (अर्थात् सृष्टि क्रम) के विरुद्ध (असम्भव) हो तो—

अविद्यमानवचनात् ॥३८॥ अचेतनेऽर्थबन्धनात् ॥३९॥ अभिधानेऽर्थवादः ॥४६॥

पूर्वमीमांसा १।२।३८,३९,४६॥

इस पर शबर भाष्य—

यज्ञसमृद्धये साधनानां चेतनसादृश्यमुपपादयितुकाम आमन्त्रणशब्देन लक्षयति—ओषधे त्रायस्वैनमिति शृणोत ग्रावाण इति ॥

'एवमोषधे त्रायस्व', 'शृणोत ग्रावाण' इत्याद्यचेतन-सम्बोधनानि स्तुतिपरत्वेन योजनीयानि ॥

तथा महाभाष्य ४।१।२५ भी देखो।

आस्यादिकल्पना दृष्टव्यभिचारित्वाद् ग्रावप्रभृतिषु न सम्भवति।

'सुखं रथं......' (ऋ १०।७५।९) इति नदीस्तुतिः। ......न ह्युदकात्मिकाया नद्या वहन्त्या रथेऽवस्थानं सम्भवति। (निरुक्त ७।७ पर दुर्गटीका)।

इन्द्रादयोऽप्यपुरुषविधाः। (निरुक्त ७।७ पर दुर्ग टीका)।

अह्नां वा शक्यत्वात्। (कात्यायन श्रौतसूत्र १।१४६॥)

इस पर कर्क भाष्य—

मुख्यार्थसम्भवे गौणी वृत्तिराश्रीयते॥

न ह्यसत्यपि सम्भवे मुख्यस्यैवार्थस्य ग्रहणमिति कश्चिदाज्ञापयिता विद्यते। ब्रह्मसूत्र ४।३।१४—

'न च कार्ये प्रतिपत्त्यभिसन्धिः' पर शांकर भाष्य॥

(पूर्वपक्षः)—मरणकाले वागादयः प्राणा अग्न्यादीन् देवान् गच्छन्तीति दर्शयति—'यत्रास्य पुरुषस्य मृतस्याग्निं वागप्येति वातं प्राणः। (बृहदा. उप. ३।२।१३॥) इत्यादिनेति चेत्।

(उत्तरपक्षः)—न भाक्तत्वात्। वागादीनां गतिश्रुतिर्गौणी। लोमसु केशेषु चादर्शनात्। ओषधीर्लोमानि वनस्पतीन् केशाः। (बृहदा. उप. ३।२।१३॥) इति हि तत्राम्नायते। न हि लोमानि केशाश्चोत्प्लुत्यौषधीर्वनस्पतींश्च गच्छन्तीति सम्भवति। ब्रह्मसूत्र ३।१।४—

'अग्न्यादिगतिश्रुतेरिति चेन्न भाक्तत्वात्' पर शांकर भाष्य॥

तथा चाग्निब्राह्मणयोर्मुखजन्यत्वं क्वचिदर्थवादे समाम्नायते—'स मुखतस्त्रिवृतं निरमिमीत, तमग्निर्देवताऽन्वसृज्यत,......ब्राह्मणो मनुष्याणाम्, अजः पशूनाम्।

जैमिनीय न्यायमाला १।४।२४॥ अधिकरण १४॥

न हि मुख्ययैव वृत्त्या लोके शब्दाः प्रवर्तन्ते, गौण्याऽपि वृत्त्या व्यवहारदर्शनात्। एवं वेदेऽपि तेषां तथा प्रयोगो भविष्यति।

न्यायमंजरी जयन्त भट्टकृत, आह्निक ४

(वेदे) अर्थवादप्रामाण्यसमर्थनम्। बहु भक्तिवादीनि ब्राह्मणानि सन्ति। निरुक्त ७।२४॥

इस पर स्कन्दमहेश्वर टीका—बहु भक्त्या उपचारेण वदन्ति॥

अर्थवादवाक्य हि स्वार्थप्रतिपादने प्रयोजनाभावाद् विधेयनिषेधयोः प्राशस्त्यनिन्दितत्वे लक्षणया प्रतिपादयति।......यथाऽऽदित्यो यूपः। इत्यादि यूपे आदित्याभेदस्य प्रत्यक्षबाधितत्वादादित्यवदुज्ज्वलत्वरूपगुणोऽनेन लक्षणया प्रतिपाद्यते। अर्थसंग्रह, लौगाक्षिकृत॥

'आदित्यो यूपो भवति' इति। अत्राऽऽदित्यपदेन आदित्यवर्ण उच्यते। आदित्यस्य यूपत्वासम्भवात्।

रामकृष्णभट्टाचार्यविरचितपूर्वमीमांसाधिकरणकौमुदी, प्रकरण ४९॥

द्विविधा हि शब्दवृत्तिः। मुख्या गौणी चेति।.........
यत्र मुख्यासम्भवस्तत्र गौण्याश्रीयते।

पूर्वमीमांसा १।२।३४,४६॥ पर रामेश्वरसूरि कृत वृत्ति॥

तस्मान्मुख्यविधिसम्भवे लक्षणया न स्तुतिः प्रतिपत्तव्येति। 'विधिर्वा स्यादपूर्वत्वाद्वादमात्रं ह्यनर्थकम्।'
पूर्वमीमांसा १।२।२०॥ इस सूत्र पर कुमारिल कृत तन्त्रवार्तिक टीका।

सम्भवति च मुख्येऽर्थे लक्षणा आश्रयितुं न युक्ता।
मीमांसा-न्यायप्रकाश। आपदेव कृत। निर्णय सागर संस्करण। पृष्ठ ५०।

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादाः......

ऋ ४।५८।३॥

इस मन्त्र के गौण ही अर्थ किए गए हैं क्योंकि मुख्य (शाब्दिक) अर्थों में असम्भव दोष आता है। पूर्वमीमांसा १।२।४६ के शबर कृत भाष्य में यज्ञपरक तथा इसी सूत्र पर रामेश्वर सूरि कृत वृत्ति में सूर्यपरक, निरुक्त १३।७ में यज्ञपरक तथा गोपथ ब्राह्मण पूर्वभाग २।१६ में भी यज्ञपरक गौण अर्थ किया गया है।

Allegory was the device frequently resorted to .... in order to make a popular appeal and to preserve the tradition There are several stories or episodes in ancient literature, which are absured if taken literally. It would certainly be unwise to reject the entire story on account of such apparent absurdities, but one should try to look deeper beyond the literal meaning to extract the wisdom of the ancients. Tagore Century Volume, 1961, (p. 213)

ऊपर भी प्राचीन विद्वानों के आलंकारिक वचनों और कहानियों से लाभ उठाना कहा गया है।

पूर्वोक्त प्रमाणों में यास्क ने तथा दुर्गाचार्य और शंकराचार्य ने वेद वा उपनिषदों के मुख्य (शाब्दिक) असम्भव अर्थ को छोड़ कर गौण सम्भव अर्थ ही माने हैं। इसी से सिद्ध है कि वेद की सभी बातें बुद्धिपूर्वक हैं अतः सम्भव ही अर्थ लेना चाहिए।

बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे। वैशेषिकदर्शन ६।१।१।।

मायागन्धर्व-नगरमृगतृष्णिकावद्वा। न्यायदर्शन ४।२।३०।।

अनियतत्वेऽपि नाऽयौक्तिकस्य संग्रहोऽन्यथा बालोन्मत्तादिसमत्वम्। सांख्यदर्शन १।२६ ।।

असम्भवं हेममृगस्य जन्म तथापि रामो लुलुभे मृगाय.........

एष वन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः......

युक्तियुक्तमुपादेयं वचनं बालकादपि। अन्यत् तृणमिव त्याज्यमप्युक्तं पद्मजन्मना। योगवासिष्ठ, मुमुक्षु-प्रकरण, सर्ग १८, श्लोक २-३ ।।

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ।।
चाणक्यनीति शास्त्र ।।

केवलं शास्त्रं समाश्रित्य न कर्त्तव्यो विनिर्णयः।
युक्तिहीने विचारे तु धर्मलोपः प्रजायते ।। बृहस्पतिः।

वेद में (और वैदिक ग्रन्थों में भी) जो आख्यान, उपाख्यान आए हैं उन का भी मुख्य (शाब्दिक) अर्थ नहीं लेना चाहिये। शाब्दिक अर्थ लेने से असम्भवादि दोष आते हैं। उनका मानुष इतिहास से कोई सम्बन्ध नहीं। उनका सम्भव अर्थ भी होता है जो प्राय: वर्तमान शाखा, ब्राह्मण आरण्यक, उपनिषद्, निरुक्त, निघण्टु के परिशीलन से भी मिल जाता है। स्थाली-पुलाक न्याय से इन्द्र और वृत्र का युद्ध ही लीजिए, जो कि इन्द्र (विद्युत्) और मेघ के संघर्ष का आलंकारिक वर्णन है—

रूपकल्पनयैवषा युद्धप्रवादा स्तुतिः ।............... नैवमवाक्यतत्त्वज्ञन मन्त्रार्थो विगाहितु शक्यः। गम्भीर-पदार्थो हि वेदः। निरुक्त १।१६ पर दुर्गभाष्य ॥

स पुनरयमितिहासः सर्वप्रकारो हि नित्यमविवक्षित-स्वार्थः। निरुक्त १०।२६ पर दुर्गाचार्य का भाष्य।

औपचारिकोऽयं मन्त्रेष्वाख्यानसमयः। नित्यत्व-विरोधात्। परमार्थेन तु नित्यपक्ष एव, इति नैरुक्तानां सिद्धान्तः। निरुक्तसमुच्चय वररुचिकृत ४।१४ ॥

'मनुष्या वा ऋषिषूत्क्रामत्सु देवानब्रुवन् को न ऋषिर्भविष्यतीति' एवमादि पुराकल्परूपोऽर्थवादः........॥ निरुक्त १३।१२ पर दुर्गाचार्य भाष्य।

आख्यायिकारूपोऽर्थवादः—'पुरुषं वै देवाः पशुमालभन्त तस्मादालब्धान्मेध उदक्रामत् ...'। इत्यादि ॥

मीमांसाबालप्रकाश, भट्टशंकरकृत, पृष्ठ ५०, अर्थवाद-भेदनिरूपणां प्रकरण ॥

एवमाख्यानस्वरूपाणां यज्ञमाने नित्येषु च पदार्थेषु योजना कर्त्तव्या, एष शास्त्रे सिद्धान्तः। तथा च वक्ष्यति-'तत् को वृत्रः ? मेघ इति नैरुक्ताः (निरुक्त २।१६।।) इत्यादि । .... औपचारिको मन्त्रेष्वाख्यानसमयः, परमार्थेन तु नित्यपक्ष इति सिद्धम् ।

निरुक्त २।१२ की स्कन्द महेश्वरकृत टीका ।।

सर्वे इतिहासाश्चार्थवादमूलभूताः । ... ...तत्र मुख्ययुद्ध सम्भवाभावादौपचारिकी उपमालक्षणार्थेन युद्ध-वर्णना ।

निरुक्त, स्कन्दमहेश्वर टीका, भाग २, पृष्ठ ९३ ।।

तत्रोपमार्थेन युद्धवर्णा भवन्ति ।

(निरुक्त २।१६ ।।) इस पर दुर्गाचार्यकृतभाष्य—

'तत्र' एवं सति उदकतेजसोरितरेतर प्रतिद्वन्द्वभूतयोः 'उपमार्थेन' रूपकल्पनया 'युद्धवर्णा भवन्ति' इति । युद्ध रूपकाणीत्यर्थः । न ह्यत्र यथा-भूतं युद्धमस्ति, न हीन्द्रस्य शत्रवः केचन सन्ति । ....विज्ञायते च—तदाहुर्नैतदस्ति यद्दैवासुरमिति यदिदमन्वाख्याने त्वदुद्यत इतिहासे त्वत् । तस्मादेतदृषिणाभ्यनूक्तम्—'न त्वं युयुत्से कतमच्चनाहर्न्न तेऽमित्रो मघवन् कश्चनास्ति । मायेत्सा ते यानि युद्धान्याहुर्न्नाद्य शत्रुन्न नु पुरा युयुत्से ।

शब्रा ११।१।६।९,१०।। (ऋग्वेद १०।५४।२ भी देखो)

कई साम्प्रदायिक लोग शैतान (=इबलीम) को सचमुच का ऐतिहासिक व्यक्ति, परमात्मा का विरोधी, पाप का देवता, सर्प के रूप वाला समझते हैं, परन्तु उनका यह असम्भव विचार वैदिक ग्रन्थों के आलङ्कारिक अर्थ को न समझने से ही उत्पन्न हुआ। क्योंकि वृत्र (=इलीविश) और इन्द्र का आलंकारिक युद्ध वैदिक ग्रन्थों में कहा गया है। वृत्र, शत्रु, सर्प रूप, (अहि), सोम, चन्द्रमा, उदर और मेघ को कहा गया है। पापी होने के कारण दुष्ट मन का भी वाचक शैतान (=स्तेन) है। अधिकतर वृत्र और इसके पर्याय मेघ के अर्थ में ही आए हैं—

(वृत्र=पाप) 'वृत्रहणं पुरन्दरम्' (यजु ११।३३)

इति पाप्मा वै वृत्रः, पाप्महनं पुरन्दरम् इत्येतत् ।

शब्रा ६।४।२।३॥

पाप्मा वै वृत्रः । शब्रा ११।१।५।७॥१३।४।१।१३॥

(वृत्र=शत्रु—) 'त्वयाय वृत्रं बधेद्' (यजु १०।८)

इति त्वयायं द्विषन्तं भ्रातृव्यं बधेदित्येवैतदाह ।

शब्रा ५।३।५।२८॥

And yet there are many passages in which the word Vritra, has the significance of enemy in general. Mouier's Sanskrit Texts, Vol. II, page 389.

(वृत्र=अहि=सर्प—) अमरकोषः । नानार्थवर्गः, २३८—अहिर्वृत्रेऽपि ··

(The serpent=devil said unto the woman Eve :—)

'For God doth know that in the day ye eat thereof, then your eyes shall be opened, and ye shall be as gods, knowing good and evil Old Testament, Genesis, III. 1,5,14.

Ahi=serpent and Vritra

Sanskrit English Dictionary by Mouier-Williams

(वृत्र=सोम—) वृत्रो वै सोम आसीत् ।

शब्रा ३।४।३।१३॥

३।९।४।२॥४।२।५।१५॥ तुलना करो—१।६।३ १७॥

सोमो वृत्रः । काठसं २९।१॥

(वृत्र=चन्द्रमा—) अथैष एव वृत्रो यच्चन्द्रमाः ।

शब्रा १ ६।४।१३,१८॥

(वृत्र=उदर—) (इमाः प्रजाः) अस्माऽएवैतद् वृत्रायोदराय बलिं हरन्ति ।

शब्रा १।६।३।१७॥

उदरं वै वृत्रः, क्षुत् खलु वै मनुष्यस्य भ्रातृव्यः ।

तैसं २।४।१२।६॥

वृत्र (=शैतान=स्तेन) को जो पापमय या पाप में प्रवृत्त कराने वाला कहा गया है वह विद्वानों के निर्णय के अनुसार मन ही है जो कि पाप में प्रवृत्ति का कारण है—

मनो वा असुरम् । जै उपब्रा ३।३५।३ ।(३।६।७।३॥)

यत्कृष्णं तदपां रूपमन्नस्य मनसः......।

जै उप ब्रा १।२५।९॥

अनृतं वै वाचा वदति, अनृत मनसा ध्यायति ।

तैब्रा १।१ ४।१॥

दुष्टमन=स्तेन=शैतान—Satan—

स्तेनं मनोऽनृतवादिनी वाक् । मैसं ४।५।२॥

हंसी आती है मुझे हजरते इन्सान पर
फेले-बद (दुष्ट कर्म) तो खुद करे
और लाअनत (धिक्कार) करे शैतान पर ॥

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।
बन्धाय विषयासङ्गि, मोक्षो निर्विषयं स्मृतम् ॥
मैत्र्युपनिषत्

आजकल के बुद्धिमान् लोगों के मतानुसार पाप करने का उत्तरदायित्व मनुष्य के अपने ऊपर है (न कि शैतान नामक किसी असम्भव और लोकोत्तर शक्ति के ऊपर)। इस लिये शैतान की सत्ता में भी तत्तत् सम्प्रदाय के लोग शंका करने लग पड़े हैं :—

Devil—

His existence and that of his attendant spirits is clearly taught by Christ and throughout the N. T. Yet there has been a tendency among protestant liberal theologians to deny it, for many reasons. (Every Man's Encyclopedia, page 367 of Vol 4).

(Devil is a personification of Evil :—)

As the responsibility for evil in recent times has been saddled more definitely upon man himself, modern theological thought has become somewhat dubious about the actual personality of the Devil (Page 225). Encyclopedia of Religion, by Vergilius Ferm, published by Littlefield Adams & Co., U. S. A.

पारसियों के मतानुसार भी यही निश्चित होता है कि दुष्ट मन ही वास्तव में शैतान है—

"Ahurmazda", who produced the reality (gaya) is called

Vohumano, 'the good mind'. The other through whom 'non-reality' (ajyaiti) originates, bears the name Akam-mano, the 'evil mind'. The good, true and perfect things which fall under the category of reality are the productions of the good mind, while all that is bad and delusive belongs to the sphere of non-reality, and is traced to the evil mind.

(From some Zoroastrian book) Angra Mainyu (Devil) is often described as serpent.

Buddha & Mara (Namuchi, Kama) = devil are two main powers according to Buddhism.

Mara ... . the Evil one, the Tempter, (the Buddhist Devil or Principle of Destruction), Pali-English Dictionary by Rhys Davids & Stede.

मार=काम—अमरकोष १, स्वर्ग वर्ग २०॥

वृत्र [=अहि(=सर्प)=असुर] अधिकतर मेघ के अर्थों में आया है। देखो निघण्टु १।१०॥

अहिर्वृत्रो मेघः । ऋ १।३२।८ पर सायण भाष्य।

ऋ १।३२।१ पर स्कन्द भाष्य भी देखो।

"The dragon undergoes another transformation, becoming a long cloud flying in the air ..... The cloud becomes a snake again" Masks of God, vol. I Primitive Mythology page 303. It is an Australian myth.

अर्थात् आस्ट्रेलिया के जङ्गली असभ्य लोगों के भ्रमात्मक और असम्भव विचार के अनुसार भयङ्कर सर्प कभी मेघ वन जाता है और मेघ मे सर्प वन जाता है। उनकी यह बात भी वैदिक आलंकारिक (गौण) शब्दों को न समझ कर उनके मुख्य (शाब्दिक) अर्थ मान लेने के कारण हुई है। वैदिक ग्रंथों में तो स्पष्ट 'अहि'(=सर्प) मेघ के नामों में आया है।

देखो निघण्टु १।१०।।

The clouds are personified as demon called vritra or Ahi, and though the language is often hyperbolical, the original meaning of the myth is seldom completely lost sight of. But in the later poems, as the Mahabharata and Puranas, the natural phenomenon is entirely forgotten, and vritra is a literal king of the Asuras or Titans. (Page 274) (History of India by Elphinstone, 9th Edition, 1911)

अर्थात् वृत्र का आलंकारिक अर्थ मेघ है।

इब्लीस(=इलीबिस—देखो ऋ १।३३।१२।।) शैतान का नाम कुरआन में आया है। और उसे अग्नि वे उत्पन्न माना गया है। तथा उसका वर्णन सच्ची घटना समझ कर किया है—(इब्लीस खुदा से) बोला कि मैं उस (आदिम) से उत्तम हूं, तूने मुझे अग्नि से बनाया और उसे (आदिम) को तू ने माटी से उत्पन्न किया ।।७७।। कुरआन, सूरा ३८, आयत ७७ ।।

बाईबल, पुराना ऐहदनामा, जकरिया। १-३ में खुदा ने भी शैतान को अग्नि से निकाली जलती लकड़ी का टुकड़ा कहा है।।

वैदिक आलङ्कारिक वर्णन को न जानने के कारण ही इसे सच्ची ऐतिहासिक घटना मान लिया गया है। क्योंकि इब्लीस

(इलीबिश) वृत्र=मेघ का नाम है और उसकी उत्पत्ति भी अग्नि से कही है, अतः यह केवल प्राकृत वर्णन है जिसे नित्य इतिहास भी कह सकते हैं—

'इलीबिशस्य' ऋ १।३३।१२ ॥ ... इलीबिशस्य मेघस्य। निरुक्त ६।१९ पर दुर्गाचार्य का भाष्य। तथा स्कन्द-महेश्वरभाष्य-इलीबिशः। मेघोऽभिधेयः ॥

(इलीबिशः=) मेघ उच्यते । निघण्टु ४।३ पर देवराजयज्वभाष्य ॥

घ्नन् वृत्रासृजदपः। ऋग्वेद खिलानि। निविद्ध्याय ।२॥

अग्नेर्वै धूमो जायते, धूमादभ्रमभ्राद् वृष्टिः।
शब्रा ५।३।५।१७ ॥

अग्नेः (वत्सः) वृत्रः (आवरको धूमः—इति सायण-भाष्यम्)। तैब्रा १।१०।६।१३ ॥

ये अग्नयोअप्स्वन्तर्ये वृत्रे......अथर्व ३।२१।१ ॥

पारसियों के धर्म ग्रन्थ जेन्दावस्ता, बहराम येस्त १-२७ के अनुसार वेरेथूघ्न (वृत्रहन्=इन्द्र=परमात्मा) ने निम्नलिखित १० अवतार लिये—१. वायु, २. ऋषभ=वृषभ, ३. अश्व, ४. ऊंट, ५. वराह, ६. कुमार, ७. कौआ, ८. मेष, ९. मृग, १०. पुरुष ॥

अर्वाचीन संस्कृत ग्रन्थों में भी ईश्वर के दस अवतार माने गए हैं परन्तु उन के नामों में भारी भेद पाया जाता है—

महाभारत, शान्तिपर्व, ३४०।३-४।। नरसिंहपुराण ५३।१६-३५।।५४ ४।। जयदेव कृत गीतगोविन्द १।१।। देवीभागवत ४।१६।५-१८।। हरिवंश पुराण १।४१।२६-१६५।। (यहां दसवें अवतार का नाम नहीं लिखा गया क्योंकि उस समय तक अभी अनिश्चित ही था)।। वायु पुराण, उत्तर भाग ३६।७१-१०४।। अथवा पूना संस्करण अ. ९८।। और ब्रह्माण्ड पुराण, वेङ्कटेश्वर संस्करण, मध्य भाग, उपोद्घातपाद ७३।७२-१०५।।७२।७६।८१।।

इन दोनों पुराणों में दशावतारों की मिलती-जुलती सूचियां हैं। इन दश अवतारों के नामों की भिन्न २ सूचियों से ही सिद्ध है कि दशावतारवाद के ऐतिहासिक घटना होने की कल्पना ही पीछे की गई। वास्तव में बात यह है कि विष्णु का दश की संख्या, विशेषतः दश दिशाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध है। व्यापनशील विष्णु का दशों दिशाओं में (अर्थात् सर्वत्र) व्यापक होना ही उसके दश गौण रूप हैं। विष्णु और इन्द्र का घनिष्ठ और तादात्म्य सम्बन्ध—'विष्णुः' (ऋ १।६१।७)=इन्द्रः। निरुक्त ५।४ पर दुर्गभाष्य।

इन्द्रस्यात्मानं दशधा चरन्तम्। तैआ ३।११।१।।

सायण भाष्य—इन्द्रस्य परमेश्वरस्य आत्मानं निजस्वरूपं दशधा चित्तिः, स्रुक्......(तैआ ३।१।१।।) इत्यादि दशहोतृमन्त्रे प्रतिपादितैराकारैः......।।

(विष्णुः=इन्द्र—) 'विष्णोः' [अथर्व ७।४८ (४६)।३।।]= व्यापनशीलस्य देवस्य, इन्द्रस्य वा। सायणभाष्य।।

इसके अतिरिक्त यज्ञ, सूर्य तथा अन्न को भी 'विष्णु' कहा गया है। इन सब का भी दश की संख्या से विशिष्ट सम्बन्ध है—

विष्णवाशानां (दिशाम्) पते । तैब्रा ३।११।४।१॥

विष्णुर्न ईडित ईडितव्यैर्देवैर्दिश्यैः पातु ।
काठसं ३५।२॥ (५।५ भी देखो)॥ कपिष्ठल कठसं ४८।३॥

दश दिशः । शब्रा ६।३।१।२१॥८।४।२।१३॥

विष्णुना देवतया दशमया......... ।
काण्व सं ११।४३॥ तथा देखो शब्रा ५।४।५।१-८॥
तैब्रा १।८।३।१-२॥

महाभारत, अनुशासन पर्व, १४७।२-३ में विष्णु दशबाहु कहा गया है।

(विष्णु=यज्ञ—) यज्ञो वै विष्णुः । कौब्रा ४।२ ।

यज्ञो विष्णुः। शब्रा १।१।२।१३॥ तथा १।९।३।९॥ भी देखो।

स उ एव मखः [=यज्ञः], स विष्णुः ।
शब्रा १४।१।१।१३॥ तथा १।९।३।९ भी देखो॥

यज्ञो वै मखः । तैब्रा ३।२।८।३॥
(यज्ञ का दश की संख्या से विशिष्ट सम्बन्ध—)

अथ द्वंद्वं पात्राण्युदाहरति—शूर्पं चाग्निहोत्रहवणीञ्च...
...तद् दश...... । शब्रा १।१।१।२२॥

अन्तो वा एष यज्ञस्य यद् दशममहः । तैब्रा २।२।६।१॥
यज्ञो वै दशहोता । तैब्रा २।२।१।६ ॥

दश ते तन्वो यज्ञ यज्ञियाः । तैब्रा ३।७।५।११ ॥

(विष्णु=सूर्य—) स यः स विष्णुर्यज्ञः सः ।

स यः स यज्ञोऽसौ स आदित्यः ।
शब्रा १४।१।१।६ ॥ तथा देखो ६।५।२।१॥१४।१।३।५॥
तैब्रा ३।२।८।३ ॥ ताब्रा ७।५।६ ॥
(सूर्य का दश की संख्या से सम्बन्ध—)

रश्मिभिर्दशभिः (ऋ ९।९७।२३ ॥)

आ दशभिः खेदयः (ऋ ८।७२।८॥)

(विष्णु=अन्न—) यत्तदन्नमेष स विष्णुर्देवता ।
शब्रा ७।५।१।२१ ॥

विश्वभृद्वै नामैषा तनूर्भगवतो विष्णोर्यदिदमन्नम् ।
मैत्र्युपनिषद् ६।१३ ॥

स चरुं कुर्वीताग्नेर्घृतं. विष्णोस्तण्डुलाः । तैसं ५।५।१।५॥
अन्न का दश की संख्या से सम्बन्ध) —)

दशग्राम्याणि धान्यानि भवन्ति—व्रीहियवास्तिलमाषा अणुप्रियंगवो गोधूमाश्च मसूराश्च खल्वाश्च खलकुलाश्च ।
शब्रा १४।९।३।२२ ॥

अवतार २४ भी माने जाते हैं। बौद्ध भी बुद्ध से पूर्व २४ बोधिसत्त्व तथा जैन २४ तीर्थंकर मानते हैं। इन सबका कारण यही है कि विष्णु रूपी यज्ञ को सूर्य. प्रजापति और संवत्सर गहा गया है। संवत्सर के २४ अर्धमास होते हैं। वही उस के २४ अंश हैं। यह तत्त्व न जानकर २४ सचमुच के अवतार मान लिए गए। विष्णु=सूर्य, यज्ञ, प्रजापति और संवत्सर पर्याय कहे गए हैं—.

संवत्सरो यज्ञः। शब्रा ११।२।७।१ ॥

एष वै संवत्सरो य एष (आदित्यः) तपति।
शब्रा १४।१।१।२७ ॥

संवत्सरो यज्ञः प्रजापतिः। शब्रा १।२।५।१२ ॥

चतुर्विंशत्यर्धमासो वै संवत्सरः। ऐब्रा ८।४ ॥

अन्वेषण द्वारा जिन उपाख्यानों का गौण आलंकारिक अर्थ ज्ञात हुआ, स्थाली-पुलाक न्यायद्वारा उससे यह तो निश्चित हुआ कि असम्भव होने के कारण उनका मुख्य (शाब्दिक) अर्थ कभी नहीं लेना चाहिये। और उनका गौण अर्थ ढूंढना चाहिये। बाईबल में सचमुच के इतिहास के रूप में आया है कि उन्होंने (नूह की कुल के लोगों ने) आपस में कहा—आओ हम ईंटें बनाएं और उनको आग में खूब पकाएं। सो उन्होंने पत्थर की जगह ईंट से और चूने की जगह गारे से काम लिया। फिर वह कहने लगे कि आओ हम अपने वास्ते एक शहर और एक बुर्ज जिसकी चोटी आसमान तक पहुचे बनाएं ······· खुदावन्द उस शहर और बुर्ज को··· ···· देखने को उतरा। और खुदावन्द ने उनकी ज़बान में भेद डाल दिया तब वह शहर और बुर्ज बनाने में असफल रहे—

पुराना ऐहृदनामा, उत्पत्ति, ११।१-९ ॥

यह विचार वैदिक साहित्य के इस औपचारिक उपाख्यान से लिया गया प्रतीत होता है—

कालकाञ्जा वा असुरा इष्टका अचिन्वत, दिवमारोक्ष्यामा इति । तानिन्द्रो ब्राह्मणो ब्रुवाण उपैत्, स एतामिष्टकामप्युपाधत्त, प्रथमा इव दिवमाक्रमन्ताऽथ स तामाबृहत्, तेऽसुराः पापीयांसो भवन्तोऽपाभ्रंशन्त । मैसं १।६।९ ॥ देखो—काठसं=८।१ ॥ कपिष्ठलकठसं ६।६ ॥ तैब्रा १।१।२।४-६ ॥ शब्रा २।१।२।१३-१७॥ कौषीतक्युपनिषद् ३।१॥ अथर्व ६।८०।२॥ पैप्पलाद सं १९।१६।१४ । cf. Homer, Od XI. 305-325.

वेद में भूतकाल वाली क्रिया का अर्थ प्रायः वर्त्तमान आदि काल वाली क्रिया में विकल्प से किया गया है, इस से भी इस बात की पुष्टि होती है कि वेद में इतिहास नहीं है—

छन्दसि लङ्लुङ्लिटः । अष्टाध्यायी । ३।४।६ ॥

देवो देवेभिरागमत् (ऋ १।१।५ ॥)

इदं तेभ्योऽकरन्नमः (ऋ १०।८५।१७ ॥)

अद्या ममार (ऋ १०।५५।५ ॥)

म्रियत इत्यर्थः ।

रुद्रो वो (युष्माकं यातुधानानां) ग्रीवा अशरैत् (छिनत्तु) पिशाचाः । अथर्व ६।३२।२ ॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्............ । ऋ १।२२।१७ ।। यदिदं किञ्च तद् विक्रमते विष्णुस्त्रिधा निधत्ते पदम् ।......विष्णु=आदित्य--देखो दुर्ग तथा स्कन्दमहेश्वरभाष्य) निरुक्त १२।१९।।

स (हिरण्यगर्भः) दाधार पृथिवीं द्यामुतेमाम्........ (ऋ१०।१२१।१ ।।)। स धारयति पृथिवीं च दिवं च ।
निरुक्त १०।२३ ।।

निम्नलिखित औपचारिक इतिहासों में यज्ञ और उत्तरवेदि, छन्दः और स्तोभ, तथा सूर्य और सोम का केवल आलंकारिक वर्णन है—

प्रजापतेर्वै नासिकाऽशीर्यंत, सोत्तरवेदिरभवद्, यज्ञः प्रजापतिर्, यदुत्तरवेदिं निर्वपति प्रजापतेरेव नासिकां मुखतः प्रतिदधाति । काठसं २५।६ ॥

देवा वै देवाश्वान् देवरथेषु युक्त्वेमान् लोकानभ्यारोहन्। छन्दांसि वाव देवाश्वाः, स्तोमा देवरथाः । जैब्रा ३।३१३ ॥

इन्द्र को अनेक देव किल्बिशों के कारण अग्नि ने यज्ञ कराया। इन्द्र (सूर्य) शुद्ध हो कर तपता है ।। जैब्रा २।१३४ ।।

(सोमः) हिरण्मय्योर्ह कुश्योरन्तरबहित आस ।...दीक्षा-तपसौ ? हैव तेऽआसतुस्तम् (सोमम्) एते गन्धर्वाः सोम-रक्षा जुगुपुरिमेधिष्ण्या इमा होत्राः । शब्रा ३।६।२।९ ।।

वेद में वर्णित ऋषि मानुष ऋषि नहीं वे सांसारिक पदार्थों के नाम हैं—

सप्त ऋषयः प्रतिहिता शरीरे...... । (यजु ३४।५५ ।।)

इस मन्त्र का अर्थ निरुक्त १२।३७ में अधिदैवत और अध्यात्म दो प्रकार का किया है ।।

ये वै ब्राह्मणाश्शुश्रुवांसस्ते वसिष्ठाः । जैब्रा २।२४२।।

वसिष्ठ जल का भी नाम है—

वसिष्ठोऽप्याच्छादित उदकसंघातः । निरुक्त ५।१४ ।। पर स्कन्दमहेश्वरटीका ।।

प्राणो वै 'वसिष्ठ ऋषिः' (यजु १३।५४ ।।)
शब्रा ८।१।१।६ ।।

चक्षुर्वै 'जमदग्निर्ऋषिर्' (यजु १३।५६ ।।) यदनेन जगत्पश्यत्यथो मनुते । शब्रा ८।१।२ ३ ।।

श्रोत्रं वै 'विश्वामित्र ऋषिर्' (यजु १३।५७ ।।), यदनेन सर्वतः शृणोत्यथो यदस्मै सर्वतो मित्रं भवति ।
शब्रा ८।१।२।६ ।।

मनो वै 'भरद्वाजऋषिर' (यजु १३।५५ ।।)

अन्नं वाजो, यो वै मनो बिभर्त्ति, सोऽन्नं वाजं भरति ।
शब्रा ८।१।१।९ ।।

प्राणो 'भौवायनः' (यजु १३।५४ ।।) (देखो—तांब्रा २०।१३।४) । शब्रा ८।१।१।४-५ ।।

वाग्वै 'विश्वकर्मर्षिर्' (यजु १३।५८।।) वाचा हृदंऽ सर्वं कृतम् । शब्रा ८।१।२।९ ॥

अध्यात्मपक्ष उच्यते—विश्वकर्मा यः परमात्मा........ बहुकर्मा भवति ऋग्वेद १०।८२।२ पर सायणभाष्य ॥

विश्वकर्मा भौवनः=आदित्यः, आत्मा—अधिदैवत और अध्यात्म अर्थ निरुक्त १०।२५-२६ पर दुर्ग (और स्कन्द भाष्य देखो) ।

तत्रेतिहासमाचक्षते—विश्वकर्मा भौवनः सर्वमेधे सर्वाणि भूतानि जुह्वाञ्चकार । तदभिवादिन्येषर्गभवति—'य इमा विश्वा भुवनानि जुह्वद्' (ऋ १०।८१।१ ।।) इति ॥

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः शिवः । यजु ३४।१२ ॥

शरीर की इन्द्रियों के वाचक गोतम, भरद्वाज आदि सप्त ऋषि—

तदेष श्लोको भवति—अर्वाग्बिलश्चमस ऊर्ध्वबुध्न-स्तस्मिन्यशो निहित विश्वरूपं, तस्यासत ऋषयः सप्त तीरे वागष्टमी ब्रह्मणा संविदाना...... प्राणा वा ऋषयः....॥३॥

इमावेव (कर्णौ) गोतमभरद्वाजावयमेव गोतमोऽयं भरद्वाजः, इमामेव (चक्षुषी) विश्वामित्र-जमदग्नी, अयमेव विश्वामित्रोऽयं जमदग्निर् । इमावेव (नासापुटौ)

वसिष्ठऽ कश्यपात्रयमेव वसिष्ठोऽयं कश्यपो, वागेवात्रिर्वाचा ह्यन्नमद्यतेऽत्तिर्ह वै नामैतद् यदत्रिरिति...... ......॥

शब्रा १४।५।२।६॥ (१४।२।२।६॥) ॥ बृहदारण्यकोपनिषद् २।२।४ ॥

(नारद=वारिद=मेघ—)

Narada means the water-giver (cloud). (Epic Mythology by Hopkins), pages 157 and 158.

आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः ।
ता (आपः) यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायण इति स्मृतः ॥

मनु० १।१० ॥

अमरकोष की महेश्वर कृत टीका में जल के नामों में 'नीर' तथा 'नार' शब्द भी आया है। नारं जलं ददाति—इति नारदो (जलदो) मेघः । जल का दान करने वाला अर्थात् बरसने वाला होने के कारण नारद को देव-कोटि में रखा गया है—

—देवो दानाद् वा......(निरुक्त ७।१५ ॥) ।

जल बरसाने वाले मेघ को जलमुच् भी कहा गया है जो मेघ बरसते नहीं वह जलधर और नमुचि हैं। अतः असुर कोटि में गिने जाते हैं ।

देखो अमरकोष कां, १, व्योम वर्ग श्लोक ७,८ । तथा

नमुचिर्ह वै नामासुर आस । तमिन्द्रो विव्याध ।

शब्रा ५।४।१।९॥

(नमुचेः) यो जलं न मुञ्चति तस्मात् (आसुरात्) असुरस्य मेघस्यायं तस्मात् ।

ऋषि दयानन्द भाष्य ॥ यजु १९।३४ पर।

Namuci—one of the malignant demons of the atmosphere who with-held the rain. Griffith's note No. 7 on his translation of RV. V 30.7.

नारद को गन्धर्व भी कहा गया है और गन्धर्व मेघ को कहते हैं—

Narada .. a Rishi . . .Devarsi.......Deva-gandharva or Gandharva-raj or simply Gandharva.

(Sans.—Eng. Dictionary by Monier-Williams).

गवामुदकानां धर्ता—सामवेद, उत्तरार्चिक, मन्त्र ११९७ 'उर्वो गन्धर्वो......' पर सायण भाष्य ॥

गामुदकं धारयतीति गन्धर्वो मेघः ।

ऋ ८।६६।५॥ पर सायण भाष्य ।

गन्धर्वों का अप्सराओं से घनिष्ठ सम्बन्ध है —

गन्धर्वाप्सरसः । शब्रा ९।४।१।४॥ जैउ १।३।२।१॥ जैब्रा ३।३४८॥

नारद गन्धर्व का पञ्चचूड़ा और उर्वशी अप्सरा से सम्बन्ध वा संवाद—महाभारत, अनुशासन, अ. ३८॥ तथा विक्रमोर्वशी नाटक, अंक ५ में भी नारद का वर्णन है।

अप्सरस् शब्द तथा उर्वशी का अर्थ विद्युत् है। इस कारण भी नारद गन्धर्व मेघवाची ही है।

वारिवर्ष्या तडित् । अप्सराश्च सा ।

काठक गृह्यसूत्र (Caland), P. 300, Appendix iv. 13-14, tika by देवपाल ।

नित्यपक्षे उर्वशी विद्युत् ।

निरुक्त ५।१४ पर स्कन्द भाष्य ।।

विशेषेण द्योतते देदीप्यते इति विद्युद् उर्वशी । दुर्गभाष्य ।।

पुरूरवाः और उर्वशी का औपचारिक इतिहास ऋ १०।९५ सूक्त तथा शब्रा ११।५।१।१-१७।। में आया है उसे पति-पत्नी कहा गया है। उनसे जो सन्तान हुई उसे आयु कहा गया है। उर्वशी (विद्युत्) से सम्बन्ध होने से तथा गन्धर्व होने से (शब्रा ११।५।१।१७) वह भी मेघ है जो कि बड़ा गर्जता है—पुरु रौति शब्दयति—इति पुरूरवाः। उसका आयु नामक पुत्र जल है—

उर्वश्यस्यायुरसि पुरूरवा असि । यजु ५।२।।

पुरूरवा बहुधा रोरूयते (निरुक्त १०।४६।।) पुरु रौतीति पुरूरवाः । वाररुच निरुक्त-समुच्चः । ४।१४।।

विद्युदेवोर्वश्यप्सराः (पृष्ठ १७०)......स हि विद्युन्मेघ-संयोगज आयुः......वृष्टयुदकरूपः ।

(ऐतेरयालोचन सत्यव्रत सामश्रमि कृत)

आयोः……उदकस्य वा । निरुक्त १०।४१॥

(उशना=शुक्र=रेतः—)

वशेः कनसि—उणादि ४।२३८॥

वश कान्तौ (=कामावासनायाम्)

उशना से शुक्र बना—

गच्छ शिश्नेन मोक्षणम् । महाभारत, शान्ति पर्व, अ० २९५ (कुम्भघोणसंस्करण)

अतएव असुरों का पुरोहित अलंकार से कहा गया । असुर-विरोधी देवों का पुरोहित बृहस्पति माने गए जो कि ब्रह्म अर्थात् वैदिक ज्ञान और बुद्धि के पुञ्ज माने गये—

उशना काव्योऽसुराणां (दूत आसीत्— तैसं २।५।८।५॥ पुरोहित आसीत् । जैब्रा १।१२५॥

उशना का 'काम' से विशिष्ट सम्बन्ध है—

तांब्रा १४।१२।५॥७।५।१९-२०।

बृहस्पति का ब्रह्मज्ञान और बुद्धि से विशिष्ट सम्बन्ध है—

मंत्रब्रा २।४।१४॥ तैसं २।६।८।७।

वसिष्ट आदि ऋषियों तथा अन्य नामों का मूल अर्थ यही है जो कि वैदिक ग्रन्थों में सांसरिक पदार्थों का दिया गया। ऐसा सम्भव है और हुआ भी है कि वैदिक शब्दों से ही मनुष्यों ने अपने ऋषियों वा दूसरे पदार्थों के नाम रख लिये—

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक् । वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे । मनु १।२१॥

दध्यङ् वा आथर्वणस्तेजस्व्यासीत् । तैसं ५।१।४।४॥
तमु त्वा दध्यङ् ऋषिः पुत्र ईधे अथर्वणः ।
ऋ ६।१६।१४॥ यजु ११।३३॥

प्रजापतिर्वा अथर्वाऽग्निरेव दध्यङ्ङाथर्वणस्तस्येष्टका अस्थानि । तैसं ५।६।६।३॥

तमु त्वा पाथ्यो वृषा समीधे दस्युहन्तमम् ...... (ऋ ६।१६।१५॥ यजु ११।३४॥)

मनो वै पाथ्यो वृषा । शब्रा ६।४।२।४॥

(इन्द्रः=कौशिकः, मेधातिथेर्मेषः, वृषणश्वस्य मेनिः, अहल्यायै जारः—)

स (इन्द्रः) सुवर्णरजताभ्यां कुशीभ्यां परिगृहीत आसीत् । अथ यत् सुवर्णरजताभ्यां कुशीभ्यां परिगृहीत आसीत्, सोऽस्य कौशिकता । तैब्रा १।५।१०।१-२ (४७-४८)॥

भास्कर भाष्यम्—अयम् इन्द्रः आदित्य उच्यते ।...... कुश्योर्भवः कौशिकः ।

मैधातिथिरग्निः तस्य मेष ! स्पर्द्धक !......वृषणश्वस्य मेने ! वर्षणशीला वृषणः, तादृशाः, अश्वा व्यापका वा रश्मयो यस्य स वृषणश्वोऽग्निः ।......तस्य मेने ! दीप्ते ! दीप्तिहेतो । यद्वा मेनिश्शरीरं वृषणश्वस्य शरीरभूत ! (३)॥

५८॥ ......अहल्यायै जार ! अहल्या वाक् समन्तात् लिख्यत इति । हल् विलेखने । तस्या जारयितः । (४)॥५९॥
(मेधातिथि—, वृषणश्व—, कौशिक—, गोतम = अग्नि)
तैआ १।१२।५८-५९। पर भट्टभास्करभाष्य ॥

इन्द्रागच्छ......हरिव आगच्छ मेधातिथेर्मेष वृषणश्वस्य मेने गौरावस्कन्दिन्नहल्यायै जारेति । शब्रा ३।३।४।१८॥

रात्रिरादित्यस्यादित्योदयेऽन्तर्धीयते (निरुक्त १२।११॥)

आदित्योऽत्र जार उच्यते रात्रेर्जरयिता ।
(निरुक्त ३।१६॥)

एष एवेन्द्रो य एष (आदित्यः) तपति ।
शब्रा १।६।४।१८ ॥

सवितैवाहनि लीयमानतया रात्रेरहल्याशब्दवाच्याया क्षयात्मकजरणहेतुत्वाज्जीर्यत्यस्मादनेन वोदितेन वा इत्यहल्याजार इत्युच्यते न परस्त्रीव्यभिचारात् ॥
(पं० ज्वालाप्रसाद कृत अष्टादशपुराणदर्पण पृष्ठ ४१५-४१६)।

इन्द्र सूर्य है और अहल्या रात्रि का भी नाम है देखो ऋषि दयानन्द कृत 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में उद्धृत उपर्युक्त निरुक्त ३।१६॥१२ ११ के प्रमाण तथा मीमांसा पर कुमारिलकृत टीका ।

वैदिक 'सप्तसिन्धवः' का वास्तविक अर्थ किसी विशेष प्रदेश वा विशेष नदियां नहीं हैं। क्योंकि लोगों ने 'सप्तसिन्धवः' शब्द से अपने-अपने प्रदेश की भिन्न-भिन्न ७ नदियां कल्पित कर ली हैं—

ऋग्वेद ५।५३।९ तथा १०।७५।६ में कुभा क्रमु सिन्धु आदि के साथ 'रसा' नदी का नाम आया है। परन्तु यह एक काल्पनिक नदी है अतः इसके साथ वाली दूसरी नदियां भी काल्पनिक हैं (देखो सरमा आख्यान)—

रसा—

" name of a river ···· a mythical river supposed to flow round the ea·th and the atmosphere ····, the lower world, hell····· (Sanskrit-English Dictionary by Mouier-Williams).

ऋग्वेद १०।७५।५ 'इमं में गङ्गे यमुने सरस्वति शतुद्रि (=सतलुज) के पीछे व्यास नदी का नाम आना चाहिये था जिसको निरुक्त ९।२६ में आर्जिकीया भी कहा है। परन्तु उससे पूर्व पुरुष्णी, असिक्नी, मरुद्वृधा और वितस्ता (=जेहलम) का नाम आया है। अतः यह भी भूमि की नदी विशेष नहीं है।

(Seven streams) into which the Ganges is divided after falling from the brow of Siva·····(सप्त स्रोतांसि)। वाल्मीकीय-रामायण। बाल काण्ड। सर्ग ४४(४३।१२-१५)॥

तत्र दिव्या त्रिपथगा प्रथमं तु प्रतिष्ठिता।
ब्रह्मलोकादपक्रान्ता सप्तधा प्रत्यपद्यत॥

महाभारत, भीष्मपर्व, ६।४७-४८॥

सप्तसिन्धवः—गङ्गा, यमुना, प्लक्षगा, रथस्था, सरयू, गोमती, गण्डकी, महाभारत, आदिपर्व, १६९।१९-२१॥

पारसियों की जेन्दावस्ता में Hept Hendava प्रदेश विशेष का नाम रखा गया।

बाईबल में सिन्धु शब्द से Hodu 'होदू' भारत का नाम रखा गया।

According to Alberuni—Saba Sin), seven rivers which flow north-ward from the mountains of the Hindu Koh and "uniting near Turmuz, form the river of Balkh (The Oxus)."

सप्त सिन्धवः—

The term is also used for the seven great oceans of the world, ... Classical Dictionary of Hindu Mythology & Religion by Dowson.

सरस्वती तो वाणी का नाम प्रसिद्ध है (ऋ ५।७।५॥ निघण्टु १।११ ॥)

इरावती भी वाणी का विशेषण आया है (ऋ ५।६३।६ ॥)

इडा भगवती गङ्गा, पिंगला यमुना नदी।

हठयोग-प्रदीपिका। उपदेश ३, श्लोक ११० ॥

योगबिन्दु और तेजोबिन्दु उपनिषदें भी देखो ॥

'सप्तसिन्धवः'......सप्त स्रोतांसि (अन्तरिक्षनद्यो वा बहुलाह्वेत्येमाद्याः—अश्वा......तितुत्रा ...... अभ्रपत्नी ...... मेघपत्नी......वर्षयन्ती......पुरस्तादरुन्धा ...... समुद्रा एव वा सप्तसिन्धुशब्देनोच्येरन्। निरुक्त ५।२७ पर दुर्गः।

(सप्त सिन्धवः (ऋ ८।६९।१२।)—वास्तव में गौण रूप से व्याकरण की ७ विभक्तियों, सामगान के ७ स्वरों, अम्बा, अलोला इत्यादि ७ आकाशस्थ नदियों (=तारा पुञ्जों) तथा ७ रश्मियों और ७ समुद्रों का नाम है। देखो—'प्रयोगोत्पत्त्य-

शास्त्रत्वादिति' पूर्वमीमांसा १।३।१८ पर कुमारिलकृततन्त्र-वार्त्तिक ।। तथा निरुक्त ५।२७ पर स्कन्द महेश्वर टीका ।

सप्त सिन्धवः सप्त विभक्तय.—महाभाष्य अ. १, पा. १, पस्पशाह्निक ।।

इन्द्र ने दिवोदास अतिथिग्व के लिए शम्बर असुर के ९९ दुर्ग (पुर्) तोड़ डाले—ऋ २।१४।६ ।। ६।४७।२१–२२ ।।

(इन्द्राविष्णू) ७।९९।५ ।। दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन को इन्द्र का वर देना । कौउप ३।१ ।।

इन्द्र ने 'दाशराज्ञ' युद्ध में सुदास की रक्षा की—ऋ ७।३३।३.५।।७।८३।८।।७।८३।७-८ में शंबर का सम्बन्ध है जो कि काल्पनिक है और मेघ का नाम है जो वृष्टि को रोक रखता है असुर होने के कारण ।

इन्द्र ने शुष्ण असुर से कुत्स की रक्षा की—ऋ १।५१।६।। १।१०६।६ ।

इन्द्र ने इलीविश (=वृत्र) के दृढ़ दुर्गों को बींध डाला—ऋ १।३३।१२।। तथा इन्द्र द्वारा वृत्रवध में ९९ नदियों का तरना—ऋ १।३२।१४।।

इन्द्र का इलीबिश (=वृत्र=शैतान) के दुर्गों को बींधना तथा इन्द्र-वृत्र-युद्ध में ९९ नदियों को तरना सिद्ध करता है कि इसी प्रकार के दिवोदास-शम्बर, इन्द्र—सुदास तथा कुत्स-शुष्ण के उपयुक्त आख्यान भी आलंकारिक लोकोत्तर (असम्भव) होने से (औपचारिक) हैं। क्योंकि इलीबिश (=वृत्र) और इन्द्र के युद्ध का आख्यान सर्वथा औपचारिक हैं, यह पूर्व में सिद्ध कर आए हैं । ९९ नदियों और ९९ पुरों का कथन भी यही सिद्ध करता है कि यह कोई सच्ची घटनाएं नहीं हैं । इसके अतिरिक्त कुत्स, शुष्ण और शम्बर भी वज्र आदि पदार्थों के नाम हैं—

कुत्सः=वज्रः—निघण्टु २।२० ॥

वज्रनामान्युत्तराण्यष्टादश । ..... तत्र कुत्स इत्येतत् कृन्ततेः । 'ऋषिः कुत्सो भवति । कर्ता स्तोमानामि'त्यौपमन्यवः । अथाप्यस्य (कुत्सस्य=वज्रस्य वधकर्मैव भवति । तत्सख इन्द्रः शुष्णं जघानेति । निरुक्त ३।११ ॥

शुष्णं शोषयितामसुरं मेघं वोदकाप्रदानेन सस्यं हत्वान्—स्कन्दमहेश्वरटीका । निरुक्त ३।११ पर ॥

इसी पर दुर्गाचार्य कृत टीकाशोषयितारमसुरं मेधं वा।

निरुक्त ६।१९ पर दुर्ग-टीका—

शुष्ण बलवन्तं मेघम् ॥

शुष्णो दानवः प्रत्यङ् पतित्वा मनुष्याणामक्षीणि प्रविवेश स एष कनीनकः कुमारक इव परिभास्ते ।

शब्रा ३।१।३।११ ॥

शम्बरः=मेघः—निघण्टु १।१० ॥

ऋ ५।२९।६ ॥ तथा ६।४३।१ के इंगलिश अनुवाद में ग्रिफिथ ने शम्बर को अनावृष्टि सम्बन्धी असुर कहा है।

इसी प्रकार ऋ १०।९८।७ में आए देवापि और शन्तनु के उपाख्यान में बृहस्पति देवता द्वारा (वाच्) स्तुति प्रदान करने रूपी असम्भव दोष के कारण यह औपचारिच है । क्योंकि बृहस्पति वाक्-शक्ति का स्वामी मान लिया गया है (शब्रा १४।४।१।२२ ॥) तथा बृहस्पति स्तोत्र, वायु, अपान आदि का भी वाचक है --

वाग्वै बृहती तस्या एष पतिस्तस्मादु बृहस्पतिः ।

शब्रा १४।४।१।२२ ॥

बृहस्पतिः स्तोत्रम् । मैसं ४।१३।८ ॥

अयं वै बृहस्पतिर्योऽयं (वायुः) पवते ।

शब्रा १४।२।२।१० ॥

अथ यस्सो अपान आसीत् स बृहस्पतिरभवत् ।

जै. उ. २।१।२।५ ॥

मनु, अङ्गिराः, भृगु आदि नाम वेद में मानुष इतिहास के विशिष्ट मनुष्यों के नाम नहीं हैं (पीछे वैदिक नामों से ही ऋषियों, राजाओं आदि के नाम रक्खे गये। इसमें मनुस्मृति १।२१ का प्रमाण पूर्व में दे आए हैं—

'सर्वेषां तु स नामांनि...... ।'

मनु—देखो ऋ. १।३१।१७॥८।४३।१३ ॥

मनुरादित्यः=निघण्टु ५।६ पर देवराज यज्व भाष्य ॥

ये विद्वाꣳसस्ते मनवः । शब्रा ८।६।३।१८ ॥

अङ्गिरा उ ह्यग्निः । शब्रा १।४।१।२५ ॥ (६।४।४।४ भी देखो) ।

तथा देखो यजु ३४।१२ ॥

(प्रजापतेर्यद् रेतसः) द्वितीयमासीत् तद् भृगुरभवत् ।

ऐब्रा ३।३४ ॥ (मैसं ४।३।९ भी देखो)

भृगु की उत्पत्ति भी मानुष सृष्टि क्रम के विरुद्ध अतः असम्भव होने के कारण यह भी कोई मानुष व्यक्ति नहीं । सृष्टि के किसी अन्य पदार्थ का ही वाचक है। तथा देखो गोब्रा १।१।३॥

यूरोपियन लोग (मैकडोनल और कीथ) भी भृगु को मानुष इतिहास के व्यक्ति नहीं मानते—देखो वैदिक इण्डैक्स, भाग-२, पृष्ठ १०९ ॥

परुच्छेप दैवोदासि— (ऋ १।१२७-१३९ का ऋषि)—

परुषि परुषि शेपोऽस्येति वा । निरुक्त १०।४२ ॥

ताम् (असुरीम्) इन्द्रः प्रतिजिगीषन् पर्वन्पर्वञ्छेपांस्य-कुरुत ।......इन्द्र उ वै परुच्छेपः । कौब्रा २३।४ ॥

नाभानेदिष्ट और वृषाकपि— यह दोनों ऋषि क्रम से रेतस् और आदित्य (तथा आत्मा) के वाचक हैं—

नाभानेदिष्ट :—

रेतो वै नाभानेदिष्टः । ऐब्रा ६।२७ ॥ गोब्रा २।६।८ ॥
(तांब्रा २०।९।२ भी देखो)

(नाभ्याम्) उ एव रेतस आशयः ।
शब्रा ३।(१३)।३।४।२८ ॥

वृषाकपि :—

तद्य त्कम्पयमानो रेतो वर्षति तस्माद् वृषाकपिः ।
गोब्रा २।६।१२ ॥

आदित्यो वै वृषाकपिः । गोब्रा २।६।१२ ॥

आत्मा वै वृषाकपिः । ऐब्रा ६।२९ ॥ गोब्रा २ ६।८ ॥

विश्वामित्र ऋषि का पुरोहित होना, तथा कुशिक और कुरुङ्ग का राजा होना भूतकाल में कहा गया है । यह भी औपचारिक आख्यान है क्योंकि विश्वामित्र ऋषि को पूर्व में कान और चक्षुः का वाचक होना दिखा आए हैं—

विश्वामित्र ऋषिः सुदासः पैजवनस्य पुरोहितः बभूव ।
निरुक्त २।४ ॥

कुशिकस्य सूनुः (ऋ ३।३३।५ ॥)

कुशिको राजा बभूव । निरुक्त २।२५ ॥

'कुरुङ्गो' (ऋ ८।४।१९ ॥) राजा बभूव । निरुक्त ६।२२॥

नैषध नड (नल) दक्षिणाग्नि का वाचक है—

अथैष नडो नैषिधो (?नैषधो) यदन्वाहार्यंपचनः (दक्षिणाग्निः) ।

शब्रा २।३।२।२ ॥

यजुर्वेद में राजा की प्रजा के सम्बन्ध में किसी देश वा वंश का नाम नहीं है। परन्तु मनुष्यकृत वेद की शाखाओं में 'भरताः', 'कुरवः' और 'पञ्चालाः— इन प्रदेशों वा राजवंशो का नाम आया है—

इमं देवा असपत्नꣳ……, एष वो अमी राजा ।

(यजुर्वेद १०।११)

एष वो भरता राजा । तैसं १।८।१०।२ ॥

एष वो कुरवो राजैष वः पञ्चाला राजा ।

काण्वसं ११।६।३ ॥

———

वैदिक तथा आर्ष ग्रन्थों की नामावली

ऋग्वेद सम्बन्धी ग्रन्थ

ऋग्वेद-मूल (सातव लेकर का प्रथम संस्करण)

ऋग्वेदमन्त्रसंहिता-मूल

सायण भाष्य, सहित ५ भाग

ऋषि दयानन्द भाष्य सहित (अपूर्ण)

वेङ्कट माधव, उदगीथ, स्कन्द तथा मुद्‌गल भाष्य सहित।

८ भाग······ ३६०)

अस्य वामीयं सूक्तम् (ऋग्वेद १।१६४)।

सायण और आत्मानन्द के भाष्यों सहित।

Asya Vamiya Suktam (Riddle of the Universe). Edited by Dr. Kunhan Raja with English translation.

ऋग्भाष्यम्—श्री मध्वाचार्य विरचितम्।

अध्यायत्रयात्मकम्।

Hymns of the Rigveda—translated into English by Griffiths.

नीति मञ्जरी—वैदिक मन्त्र द्यावेद कृत भाष्यसहित।

Rigveda, German—by Alfred Ludwig translator.

French Rigveda, trans. by Langlois.

2 Vols. 1876.

Rigveda (German)—translated by Grassmann,

2 Vols. 1876-77.

Rigveda German)—translated by Geldner.

यह यूरोपियन विद्वान् का अन्तिम रिसर्च युक्त अनुवाद है, (जर्मन भाषा में)

ब्राह्मण ग्रन्थ

ऐतरेय ब्राह्मण—सायण भाष्यसहित। २ भाग
षड्गुरुशिष्यकृत भाष्यसहित। ३ भाग
कौषीतकि=शांखायन। मूल

Rigveda Brahmanas, English translation by Keith (Translation of Aitareya and Kausitaki Brahmana).

आरण्यक

ऐतरेयारण्यक—सायण भाष्यसहित। शांखायनारण्यक (=कौषीतक्या०) मूल

English translation by Keith.

उपनिषद्

ऐतरेय—शंकर भाष्य सहित। रङ्गरामानुज, भाष्य सहित। मध्वाचार्य के भाष्य सहित।

कौषीतक्युपनिषद्—शंकरानन्दकृत टीका-सहित। आनन्दाश्रम प्रैस पूना के उपनिषत्समुच्चय में।

श्रौतसूत्र

आश्वलायन—गार्ग्यनारायणीय वृत्तिसहित। शाङ्खायन—आनर्त्तीय भाष्य सहित॥ अ २०

Shankhayan—translated into English by Prof. W. Caland.

गृह्यसूत्र

सांख्यायन—डाक्टर सीताराम सहगल सम्पादित ॥ (सांख्यायन गृह्य संग्रहः तथा) कौषीतकि गृह्यसूत्राणि ।

धर्मसूत्र

वसिष्ठ धर्मसूत्र ।

प्रातिशाख्य

ऋग्वेद-प्रातिशाख्य—(शौनकीय) उव्वट भाष्य सहित ।

अनुक्रमणी

सर्वानुक्रमणी—कात्यायन कृत । (मूल ऋग्वेद (सातवलेकर) प्रथम संस्करण के अन्तिम भाग परिशिष्ट रूप में) ।

—Edited by Macdonell.

बृहद्देवता—शौनकाचार्य कृत । कलकत्ता ।

—Edited and translated into English by Macdonell.

ऋग्वेदानुक्रमणी—श्री माधव भट्ट विरचिता प्रथम भाग । (अनार्ष परन्तु लाभप्रद) ।

Rigvidhana by Saunaka—Edited in Roman Script by Meyer.

Rigvidhana—translated into English by J. Gonda,

अन्य ऋग्वेदीय ग्रन्थ

उपलेख सूत्र (परिशिष्ट)—टीकोपेत कलकत्ता ।

...Edited with text, German translation, Introduction and notes by G. Pertsch.

पदगाढ़—शाकल्य प्रणीत ।
पादविधान—शौनक कृत । कात्यायन से पूर्वकालीन ।
पार्षद सूत्र (ऋक्प्रातिशाख्य) कलकत्ता ।
जटापटल ।
विकृतिवल्ली व्याडि कृत ।

यजुर्वेद सम्बन्धी ग्रन्थ

यजुर्वेद—ऋषि दयानन्द भाष्य सहित ।
यजुर्वेद—उव्वट महीधर भाष्य सहित ।
Hymns of the Yajurveda-translated into English by Griffith.
काण्व संहिता—सायण भाष्य सहित । अ. १–२० ।
,, मूल ।
शुक्लयजुर्वेदीय माध्यन्दिनीय मन्त्र संहिता ।
मन्त्र संहिता (शुक्ल यजुर्वेद काण्वशाखीय) ।
मन्त्रार्थ दीपिका—शत्रुघ्न कृत ।
यजुर्मञ्जरी—अमुद्रित ।
काण्व संहिता भाष्य संग्रहः—अध्याय ३१ से ४० तक । सरस्वती सुषमा (राजकीय संस्कृत महाविद्यालय बनारस २) सप्तम वर्ष के एक अंक से नवम वर्ष के द्वितीयांक तक प्रकाशित । पत्रिका का वार्षिक मूल्य ७ रुपये ।
यजुर्वेद संहिता पदपाठ ।

ब्राह्मण ग्रन्थ

शतपथ ब्राह्मण (माध्यन्दिनीय) सायण-भाष्य-सहित, ५ भाग ।।
,, मूल ।।

शतपथ ब्राह्मणे । काण्वशाखीय । कैलैण्ड सम्पादित ।
Satapatha Brahmana-translated into English
by J. Eggelling 5 Vols.

उपनिषद्

बृहदारण्यकोपनिषद् (काण्वशाखीय) शांकर भाष्य सहित ।
ईशोपनिषद् " " ।

श्रौत सूत्र

कात्यायन—कर्कभाष्य सहित ॥ विद्याधर टीका सहित ॥

गृह्यसूत्र

पारस्कर गृह्यसूत्र—पांच टीकाओं सहित ।

प्रातिशाख्य

शुक्ल यजुर्वेद प्रातिशाख्य—उव्टकृत भाष्य सहित ।

अनुक्रमणी

शुक्ल यजुर्वेद सर्वानुक्रमसूत्र ॥ शुक्लयजुर्विधान सूत्र ।

अन्य ग्रन्थ

अष्टादश-यजुपरिशिष्ट जिस में शौनककृत चरणव्यूह है। शेष १७ कात्यायन कृत कहे जाते हैं। थोड़े ही मुद्रित हुए हैं।

यजुर्वेदीय अन्य शाखा (कृष्ण यजुर्वेद)

तैत्तिरीय संहिता-सायण भाष्य सहित । ८ भाग
" " —भट्ट भास्कर भाष्य सहित ।
१२ भागों में से अनेक भाग लुप्त हैं ।

मैत्रायणी संहिता—मूल। काठक संहिता—मुल। कपिष्ठल-कठ संहिता—(त्रुटित) मूल। तैत्तिरीय संहिता—मूल॥ पदपाठ। २ भाग॥ एकाग्नि-काण्ड॥

ब्राह्मण

तैत्तिरीय ब्राह्मण—सायणभाष्य सहित। ३ भाग॥ भट्ट-भास्कर भाष्य सहित द्वितीयाष्टक।

आरण्यक

तैत्तिरीयारण्यक—सायणभाष्य सहित। २ भाग॥ भट्ट-भास्कर भाष्य सहित।

काठक संकलन—डा. सूर्यकान्त द्वारा सम्पादित।

मैत्रायणीयमारण्यकम्—(मैत्र्युपनिषद्) शंकरानन्द टीका सहित, उपनिषत्समुच्चय में। आनन्दाश्रम प्रेस, पूना।

उपनिषद्

कठोपनिषद्—शंकर-रंगरामानुज-मध्वभाष्य सहित।

श्वेताश्वतरोपनिषद्—शंकर भाष्य सहित।

मैत्र्युपनिषद्—यह उपनिषद् आर्षकाल और पौराणिक काल के मध्य में बनाई गई प्रतीत हातो हैं। देखो 'आरण्यक ग्रन्थ'।

श्रौतसूत्र

बौधायन—कैलेंड सम्पादित। आपस्तम्ब—गार्बे सम्पादित। भारद्वाज, वाराह तथा मानव-मूल॥ आपस्तम्ब शुल्व सूत्र। सत्याषाढ (हिरण्यकेशीय) १० भाग सटीक।

Apastamba Srauta Sutra (German-translated by C. W. Caland, 3 Vols.

गृह्यसूत्र

आपस्तम्ब — हिरण्यकेशीय (सत्याषाढ) ॥ वाराह, Edited by Dr. Raghuvira ॥ लौगाक्षि (काठक) सटीक, मानव, (सटीक) ॥ बौधायन और भारद्वाज—मूल ।

धर्म सूत्र

आपस्तम्ब, बौधायन, सत्याषाढ (=हिरण्यकेशीय) । वैखानस-श्रौत, गृह्यसूत्र तथा धर्म-प्रश्न वैष्णवों के वैखानस सम्प्रदाय के ग्रन्थ हैं आर्ष नहीं। इन के द्वारा भी अनुसन्धान में कुछ लाभ हो तो ले लेना चाहिये ।

.. Sacred Laws of the Aryas as taught in the schools of आपस्तम्ब, गौतम, वसिष्ठ, बौधायन—English translation by Buhler,

प्रातिशाख्य

तैत्तिरीय, चतुरध्यायिका ।

अनुक्रमणी

चारायणीयमन्त्रार्षाध्याय ।

सामवेद सम्बन्धी ग्रन्थ

सामवेद संहिता—सायणाचार्य कृत भाष्य समन्विता ।

Hymns of the Sama-veda—English translation by Griffith. By Benfay in German—By Stevenson in English.

Samaveda of the Jaiminiyas--Edited in Devanagari for the first time by Dr. Raghuvira—

जैमिनीय संहिता।
सामवेद पदपाठ—गार्ग्य कृत।
आरण्य संहिता—सायण भाष्य सहित।
छान्दोग्य मन्त्र भाष्य। गुणविष्णु कृत।

ब्राह्मण

ताण्डय महाब्राह्मण—सायण भाष्य सहित। २ भाग।

Panchavimsa or Tandya Mahabrahmana--English translation by Dr. C. W. Caland.

जैमिनीय ब्राह्मण।
दैवत ब्राह्मण तथा षड्विंश ब्राह्मण, सभाष्य।
संहितोपनिषद् ब्राह्मण—

With a commentary in Roman script, edited by A. C. Burnell.

मन्त्र ब्राह्मण, वंश ब्राह्मण, जैमिनीय वंश ब्राह्मण (दुष्प्राप्य)।
जैमिनीय आर्षेय ब्राह्मण (दुष्प्राप्य)। आर्षेय ब्राह्मण, सभाष्य।

Jaiminiya Brahmana in auswahl-with Dutch translation, with an Index of Proper names by Dr. C. W. Caland.

सामविधान ब्राह्मण (अनार्ष), सभाष्य।

आरण्यक

जैमिनीय (तलवकार) उपनिषद् ब्राह्मण।

उपनिषद्

केन, छान्दोग्य शंकरादि भाष्य।

श्रौत सूत्र

लाट्यायन, द्राह्यायण, आर्षेय कल्प (=मशक सूत्र), क्षुद्र सूत्र,

जैमितीय (अग्निष्टोम मात्र)।
निदान सूत्र, उपनिदान सूत्र।

गृह्य सूत्र

खादिर, द्राह्यायण, गोभिल, जैमिनीय, कौथुम।

धर्म सूत्र

गौतम धर्म सूत्र सटीक।

शिक्षा

नारदीय शिक्षा। (निदान सूत्र, उपनिदान सूत्र)।

प्रातिशाख्य

पुष्प सूत्र (=फुल्ल सूत्र)—अजातशत्रु कृत भाष्य सहित।
ऋक्तन्त्र—शाकटायन कृत । Edited by Dr. Surya Kanta.
साम्रतन्त्र—ए. ऐम. रामनाथ दीक्षित द्वारा सम्पादित ।

अनुक्रमणी

नैगेय-शाखानुक्रमणी—

Edited by Dr. S. R. Sahgal. Au improvement on the Weber's edition with various indices. Printed in Devanagari for the first time.

अथर्ववेद सम्बन्धी ग्रन्थ

अथर्ववेद संहिता—सायण भाष्य, ५ भाग; २२५।
पैप्पलाद संहिता—मूल। ३ भाग। रघुवीर सम्पादित।
अथर्ववेदीया पैप्पलाद संहिता—Edited by Durgamohan Bhattacharya, Kanda I.

आथर्वण मन्त्रसंहिता ।

Hymns of Atharva-veda—translated into English by Griffith, 2 Vols.

Atharva Veda Samhita—translated into English by Whitney. 2 Vols.

Hymns of the Atharva Veda—English translation by Bloomfield.

ब्राह्मण

गोपथ ब्राह्मण (मूल) कलकत्ता ॥ तथा
—Edited by Gaastra (Holland)

उपनिषद्

प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य—शंकरादि भाष्य सहित ।

[पूर्वोक्त १३ उपनिषदों के अतिरिक्त यह चार भी ऋषिकृत हैं—बाष्कल, छागलेय, आर्षेय और शौनक एस. के. बेलवल्कर कृत इंगलिश अनुवाद के साथ मिलती हैं] ।

श्रौत सूत्र

वैतान सूत्र ।

गृह्यसूत्र

कौशिक सूत्र—लेखक उदयनारायण सिंह ।

Kausika-sutra—Edited by Bloomfield with abridged commentary of Darila and Kesava-paddhati.

प्रातिशाख्य

अथर्व प्रातिशाख्य—

Edited by Pt. Vishva Bandhu Shastri. Edited by Dr. Surya Kanta, M.A.

अनुक्रमणी

बृहत्सर्वानुक्रमणिका—

अथर्ववेद सम्बन्धी अन्य ग्रन्थ

(अथर्वपरिशिष्ट ७२, यह अनुसन्धान में उपयोगी हैं। इन में कौत्सव्य निघण्टु ऋषिकृत है)

Edited by : Bolling, America.

माण्डूकी शिक्षा, दन्त्योष्ठविधि, पञ्चपटलिका ॥

अक्षर तन्त्र—आपिशलि कृत

अन्य आर्ष ग्रन्थ

इतिहास—वाल्मीकीय रामायण……बड़ोदा।

महाभारत—भंडारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट पूना द्वारा सम्पादित।

दर्शन

ब्रह्मसूत्र, पूर्वमीमांसा, न्यायसूत्र (वात्स्यायन भाष्य सहित), वैशेषिक (प्रशस्तपाद भाष्य सहित), सांख्य सूत्र, योग सूत्र (व्यास भाष्य)।

धर्मशास्त्र

मनुस्मृति तथा सब धर्म सूत्र, नारदीयमनुसंहिता, नारद स्मृति, बिस्णुस्मृति (जौली सम्पादित)।

पं तुलसीराम स्वामी कृत भाषा टीका तथा गुजराती प्रिटिङ्ग-प्रेस बम्बई तथा निर्णयसागर प्रेस बम्बई में कुल्लूक भट्ट टीका

सहित छपी मनुस्मृति में अनेक अतिरिक्त श्लोक भी दिए गए हैं।

आयुर्वेद

चरक, सुश्रुत, भेलसंहिता, कश्यपसंहिता।

शिल्प

भारद्वाज कृत—विमानशास्त्र।

व्याकरण

पाणिनीय, महाभाष्य, कात्यायनवार्त्तिक, शाकटायन कृत—उणादि सूत्र।

छन्दः

पिंगल कृत—छन्दः सूत्र, निदान सूत्र, उपनिदान सूत्र।

ज्योतिष

वेदाङ्ग ज्योतिष (=आर्च ज्योतिष)—

Edited with his own English Translation & Sanskrit Commentary by Shama Shastri.

निरुक्त

निघण्टु देवराजयज्वकृत भाष्य सहित तथा निरुक्त—यास्कमुनि कृत ॥ कौत्सव्य निघण्टु ॥

उपर्युक्त प्रामाणिक ग्रन्थों में स्वार्थी लोगों ने हिंसा अश्लीलता और असम्भव दोषों से युक्त वचन मिला दिये हुए हैं, वह वचन माननीय नहीं हैं।

———

वेदों के सबन्ध में अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ

Vedic Concordance—by Bloomfield.

इसमें लगभग सारे वैदिक साहित्य में जहां-जहां प्रत्येक वेद-मन्त्र का पाद अर्थात् चतुर्थांश भी आया है उसका पूरा पता दिया है। सच तो यह है कि इस के बिना वैदिक अनुसन्धान में यथेच्छ और शीघ्र लाभ हो ही नहीं सकता। ४० रु.

वैदिक इण्डैक्स—मैकडौनेल तथा कीथ कृत।
हिन्दी अनुवादकर्त्ता—राजकुमार राय।
दो भागों में सम्पूर्ण। ४० रु.

वैदिक कोश—मैक्डौनेल और कीथ कृत वैदिक इण्डेकस का हिन्दी अनुवाद।
डाक्टर सूर्यकान्त कृत— २२ रु. ५० पैसे

ब्राह्मणोद्धार कोषः—भीमदेवः, हंसराजः, इत्येताभ्यां सहकृतेन विश्वबन्धुना सम्पादितः। वेद की शाखाओं, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों में जो वेदार्थ जानने की अति प्रचुर सामग्री है वह इस एक ही ग्रन्थ से मिलेगी। इसे बृहन्निरुक्त ही समझना चाहिये। ६० रु.

निघण्टु—देवराजज्वकृत टीका सहित।

निरुक्त—दुर्गाचार्य तथा स्कन्दमहेश्वर कृत टीका सहित।

निरुक्त—English translation by—Lakshman Sarup.

निरुक्त—निघण्टु सहित ॥ मूल। डा० लक्ष्मण सरूप द्वारा सम्पादित उत्तमोत्तम मूल संस्करण।

Indices to Nirukta — by Dr. Lakshman Sarup. It contains word-index, etc.

कौत्सव्य निघण्टु—अथर्वपरिशिष्टों में मुद्रित।

प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता

हरचन्द लक्ष्मणदास, संस्कृत पुस्तक-विक्रेता, दरिया गंज-१, देहली—७।

मोती लाल बनारसी दास, संस्कृत बुक-सेलर्ज, जवाहर-नगर, बंगलो रोड, दिल्ली।

मैनेजर—निर्णयसागर छापाखाना, २६-२८, डा० एम्० बी० वेलकर स्ट्रीट, बम्बई—२।

खेमराज श्रीकृष्णदास, श्री वेङ्कटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई।

मनोहरलाल मुन्शीराम, ओरिएण्टल बुक सेलर्ज, नई सड़क, दिल्ली।

ओरिऐण्टल बुक एजन्सी, शुक्रवार पेठ, पूना।

विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भण्डार, साधु आश्रम,
P. O. Sadhu Ashram, Hoshiarpur (Pb.).

चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ आफिस, पोस्ट बाक्स ८, वाराणसी—१।

Metropolitan, Calcutta.

Asiatic Society of Bengal, Calcutta.

Travancore University Press, Trivandrum.

Annamalai University Press, Annamalai Nagar.

Mysore University, Mysore.

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर (राजस्थान)।

आनन्दाश्रम प्रेस, पूना।

International Academy of Indian Culture, 122 Hauz Khas, Enclave, New Delhi—16.

स्वाध्याय मण्डल, पारडी (जि० सूरत)।

वैदिक संशोधन मण्डल, तिलक मैमोरियल, पूना—२।

गुजराती प्रिंटिग प्रेस, Sassoon Building, Bombay.
भण्डारकर ओरियण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना।
Luzac & Co., 46, Great Russell Street, London.
Probsthain, London.
Oxford University Press, London.
E. J. Brill, Leidan (Holland).
Brauchhaus, (Germany).
Harrassowitz, Wiesbaden (Germany).
Harrvard University. Harvard Oriental Series.
American Oriental Society.

लेखक के अन्य प्रकाशनीय ग्रन्थ

१. विष्णु के १० और २४ अवतारों का वैदिक रहस्य।

२. भूमि भ्रमण वैदिक साहित्य में।

३. पाश्चात्य विज्ञान वैदिक ग्रन्थों में।

४. वैदिक अलंकार का न जानना ही साम्प्रदायिक भ्रमों का कारण।

मुद्रक :
वैरायटी इलैक्ट्रिक प्रेस,
फगवाड़ा रोड, होशियारपुर।

लेखक के अन्य ग्रन्थ

१. ब्राह्मणोद्धार कोष—

वेदों की शाखाओं, ब्राह्मण-ग्रन्थों के वेदानुसन्धान
में अत्यन्त उपयोगी प्रमाणों का संग्रह ... ६० रु.

२. **Physical & Scientific Interpretation of Aryan Mythology.**

[देवतावाद का भौतिक और वैज्ञानिक रहस्य]

गणेश, स्कन्द, अश्विनीकुमार—और यम देवता ... १ रु. ५० पै.
[राष्ट्रभाषा तथा इंगलिश में एकत्र]

प्राप्ति स्थान—विश्वेश्वरानन्द पुस्तक भण्डार,
P. O. साधु आश्रम, होश्यारपुर।